दैवी गुणों के पोषक थे प्रजापिता ब्रह्मा

दुनिया में जितने भी संत, साधक और महापुरुष हुए हैं, सभी का मकसद एक बेहतर और सुन्दर समाज का निर्माण करना रहा है, भले ही रास्ते अलग-अलग अपनाये गये हों। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के साकार संस्थापक प्रजापिता ब्रह्मा बाबा का मुख्य उद्देश्य सभी मनुष्यों में दैवी गुणों को आत्मसात् कराना था। दैवी गुणों से मनुष्य को देवता की उपाधि से विभूषित किया जाता है तथा आसुरी कर्मों से राक्षसी प्रवृत्ति का खिताब मिलता है। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा को अच्छी तरह से यह ज्ञात था कि यदि दैवी गुणों वाली दुनियां का निर्माण करना है तो व्यक्तिगत स्तर पर मूल्यों का प्रकाश स्तम्भ बनना होगा। उन्होंने जिन्दगी के प्रत्येक क्षण को इसमें लगाया। धीरे-धीरे उनके अन्दर वे सभी गुण विद्यमान हो गये जो देवताओं के होते हैं अर्थात वे सम्पूर्णता के करीब पहुंचकर प्रकाश स्तम्भ बनकर नये युग और नये व्यक्तित्व की स्थापना के कार्य में लग गये।

संस्था की स्थापना से पहले उनके अन्दर मूल्य तो थे परन्तु ईश्वरीय सान्निध्य पाने के बाद दैवी गुणों की पराकाष्ठा को परवान चढ़ाते हुए लोगों के सामने प्रबल उदाहरणमूर्त्त बने। एक ऐसा व्यक्तित्व जिसको दुनिया की सर्वोच्च सत्ता परमात्मा शिव ने चयनित किया। उनके भौतिक शरीर को आधार बनाकर एक वैश्विक परिवर्तन की क्रान्ति का सूत्रपात किया। कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के बीच की संधि काल का एहसास परमात्म शक्ति ने उन्हें करा दिया था। इस संधि काल में प्रत्येक कल्प में उनके द्वारा किये जाने वाले महान कार्यों की स्मृति ताजा कर उन्हें अध्यात्म पथ का राही बना दिया। उन्होंने भी परमपिता परमात्मा शिव को सामने रखते हुए ईश्वरीय शक्तियों को जीवन का अंग बनाया। धीरे-धीरे उनका व्यक्तित्व निखरने लगा। उनके चेहरे और चलन से दैवी गुणों की आभा आने वाले लोगों को सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लेती। उनके सामने जो भी व्यक्ति आता उसे ईश्वरीय कार्यों के निमित्त शान्तिदूत का आभास होने लगता क्योंकि उनके अन्दर ईश्वरीय शक्ति की उपस्थिति होती थी। ईश्वर के निर्देशन में एक नयी दुनियां की स्थापना करना उनका मिशन हो गया।

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा के बचपन का नाम दादा लेखराज था। वे हीरे जवाहरात के व्यापारी थे परन्तु बचपन से ही सर्व मनुष्यात्माओं की सुख-शान्ति के लिए कामना और ईश्वर की अराधना करना उनकी आदतों में शुमार था। वे किसी भी मनुष्य का दुख सहन नहीं कर पाते थे। वे परमात्मा से सदा यही प्रार्थना करते थे कि दुनिया में कोई भी दुखी और अशान्त न रहे। सर्व आत्माओं को दुख और अशान्ति से मुक्ति दिलाना चाहते थे। इसके लिए परमात्मा को प्राप्त कर उनसे विशेष अनुरोध करना उनके मन की प्रबल जिज्ञासा थी। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उन्होंने अपने जीवन काल में 12 गुरु किये थे। परन्तु उनके मन की इच्छा सदा अपूर्ण रही और वे निरन्तर ईश्वर की प्राप्ति के लिए प्रयासरत रहते। उनकी इस कल्याणकारी योजना और भावना के चलते उनकी ख्याति धीरे-धीरे देश-विदेश के राजाओं - महाराजाओं के पास तक पहुंच गयी। कई राजा तो उन्हें कहते कि राजा के सारे गुण तो आपके अन्दर हैं, राजा तो आपको होना चाहिए।

एक दिन उनके जीवन काल में एक महान घटना घटी। वे अपने मित्र के यहाँ वाराणसी गये थे। रात्रि के समय वे ध्यान की गहन मुद्रा में लीन थे। इतने में उन्हें पुरानी दुनियां के महाविनाश का साक्षात्कार

होने लगा जिसमें विशालकाय तथा विनाशकारी परमाणु बमों की ज्वाला में पूरी दुनिया को तबाह होते देखा। उस समय ऐसे शस्त्रों की कल्पना तक नहीं की गयी थी। इसके तत्पश्चात उन्हें सम्पूर्ण सुख-शान्ति के साम्राज्य वाली दुनियां के साक्षात्कार होने लगे। इसके बाद जब दादा लेखराज का ध्यान टूटा तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा और उन्होंने इस घटना को अपने गुरू का कमला समझा। परन्तु पूछने पर गुरूओं के भी समझ में नहीं आया कि यह कैसे हुआ। बाबा शिघ्र ही समझ गये कि यह ईश्वरीय शक्ति की कमाल थी। इसके बाद उन्होंने वहीं से अपने घर में पत्र लिखा कि पाना था सो पा लिया। अब उन्हें हीरे जवाहरात के व्यापार कौड़ियों जैसे लगने लगा। इसके बाद उन्हें फिर ईश्वरीय शक्ति का साक्षात्कार हुआ। उन्हें निर्देशन मिला कि अब तुम्हें नयी दुनियां बनानी है। स्वयं परमात्मा शिव ने अपनी उपस्थिति का परिचय दिया। इसके बाद दादा लेखराज ने व्यापार अपने सहयोगी को सौंपकर गुणों के हीरे जवाहरात के व्यापार करने में लग गये। परमात्मा ने ज्ञान का कलश माताओं-बहनों के सिर रखकर नयी दुनियां की स्थापना का कार्य प्रारम्भ कराया।

उन्होंने अपनी चल-अचल सम्पत्ति माताओं-बहनों का एक ट्रस्ट बनाकर उनके नाम कर दिया और स्वयं ट्रस्टी बनकर इस महान कार्य में लग गये। उन्होंने माताओं-बहनों को उस समय आदर्श स्थान दिया जब समाज में महिलाओं के अधिकारों पर चर्चा तक नहीं होती थी। यहीं से छोटे से कारवां का शुभारम्भ ओम मण्डली के नाम से हुआ। इसके लिए विभिन्न आसुरी शक्तियों का सामना करना पड़ा परन्तु विजय सत्य की हुई। उन्होंने माताओं-बहनों को आसुरी दुनिया के फुसलाने वाले वैभवों से दूर रहते हुए ईश्वरीय शक्तियों को अपनाकर नयी दुनिया के सृजन के लिए प्रेरित किया। धवल वस्त्रों में मानवीय मूल्यों से सजी इन शिवशक्तियों ने विश्व परिवर्तन के महान कार्य का बीणा उठाया। सन् 1937 में हैदाबाद सिंध (जो अभी पाकिस्तान में है) में इस संस्था की स्थापना हुई। भारत पाकिस्तान विभाजन के बाद यह संस्था सन् 1950 में राजस्थान के पर्यटन स्थल माउण्ट आबू में आयी। यही से विश्व परिवर्तन की महान प्रक्रिया का प्रारम्भ हुआ। ईश्वरीय शक्ति द्वारा दादा लेखराज का प्रजापिता ब्रह्मा के रूप में नामकरण हुआ।

प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने सभी धर्मों और सम्प्रदायों के लोगों का सम्मान करते हुए आध्यात्मिकता के पथ से ईश्वरीय योजना का रहस्य समझाया। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा ने तीव्र तपस्या करते हुए सम्पूर्ण स्थिति को प्राप्त करते हुए 18 जनवरी, 1969 को नश्वर शरीर का त्याग किया। माताओं-बहनों के इस महान क्रान्ति धीरे-धीरे आज पूरे विश्व में एक वट वृक्ष की भांति फैल चुकी है। इन माताओं–बहनों ने दुर्गा, काली, सरस्वती और लक्ष्मी के रूप को सिद्ध करते हुए लाखों आत्माओं के जीवन में दैवी गुणों के पुष्प रोपित किए है। आज भारत सहित पूरे विश्व के 132 देशों में 8500 सेवाकेन्द्रों पर नौ लाख से भी ज्यादा लोग इस पथ के अनुगामी हैं। आज प्रजापिता ब्रह्मा बाबा भले ही हमारे बीच नहीं हैं परन्तु वे फरिश्ता रूप में आज भी नयी दुनियां की स्थापना के कार्य में सूक्ष्म उपस्थिति का एहसास कराते हैं। इस 18 जनवरी पर उस महान विभूति को शत् शत् नमन करते हुए उनका अनुकरण करना ही हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com